CHAPTER 2, राजस्थान की रजतबूंदें

PAGE 20,अभ्यास

11:1:1: अभ्यास:1

1. राजस्थान में कुंई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुंओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है?

उत्तर : राजस्थान के बारे में सब जानते है कि राजस्थान में रेत अथाह है और भारत का सबसे बड़ा रेगिस्तान भी वही पर है चारो तरफ रेत होने के कारण जब वर्षा होती है तो बारिस का पानी रेत में समा जाता है फलस्वरूप ऊपरी सतह पर पानी का तो कुछ असर नहीं होता परन्तु नीचे की सतह पर नमी जमा हो जाती है। यही नमी बालू के निचे मिट्टी की परत के ऊपर तक रहती है। इस नमी को पानी के रूप में बदलने के लिए चार-पाँच हाथ के व्यास कि ऊपरी सतह को तीस हाथ की गहराई तक खोदा जाता है। खुदाई के साथ चिनाई भी की जाती है। इस खुदाई और चिनाई के बाद खड़िया की पट्टी पर पानी का रिसाव शुरू हो जाता है और रिस-रिस कर पानी एकत्रित होने लगता है। इसी तंग गहरी जगह को कुंई कहा जाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कुंई के ऊपरी सतह का व्यास कुएँ के व्यास में छोटी होती है। लेकिन ये इसकी गहराई कुएँ जितनी ही होती है।

11:1:1: अभ्यास:2

2. दिनोदिन बढ़ती पानी की समस्या से निपटने में यह पाठ आपकी कैसे मदद कर सकता है तथा देश के अन्य राज्यों में इसके लिए क्या उपाय हो रहे हैं? जानें और लिखें?

उत्तर : आज के दिनों में दिन प्रतिदिन धरती पर पानी की समस्या एक विकट और विकराल समस्या का रूप ले रही है। और हम मानव के द्वारा प्रकृति से अत्यधिक छेड़- छाड़ ही इसका मुख्य कारण है। पेड़ - पौधो और जंगलो के दोहन के कारण पानी की समस्या और भयंकर होती जा रही है। हर साल बारिश सामान्य स्तर से कम होती जा रही है जिसके कारण नदियों और तालाबों का जल-स्तर घटता जा रहा है। सभी जगहों पर लोग पानी की कमी से जूझ रहें हैं। मानव द्वारा निर्मित ऐसे वातावरण में राजस्थान की रजत बूंदें पाठ से हमें जल संग्रह और जल प्राप्ति के अन्य उपायों और पानी के उचित प्रयोग पर विचार करने में काफी मदद करता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

हमारे देश में भी कई जगहों पर पानी की समस्या से निपटने के लिए सरकार द्वारा कई सरकारी और गैर सरकारी अभियान जोर - शोर से चलाए जा रहें हैं। लोगों को प्रिंट मिडिया, विज्ञापन, कार्यक्रमों, के माध्यम से जागरूक किया जा रहा है सिने जगत की हस्तियों द्वारा पानी के विषय में अवगत कराया जा रहा है। जल को पुनरावृत्ति करने के तरीको को जनमानस को बताया जा रहा है। वर्षा के पानी के बचाव के कई उपाय गाँवों और शहरों में उपलब्ध किए जा रहें हैं। गाँवों में तालाबों का पुनर्निर्माण किया जा रहा है। नदियों को साफ किया जा रहा है। छोटे कुएँ और जलाशयों का बहुतया स्तर पर निर्माण कर पानी के भूमिगत जल-स्तर को बढ़ाया जा रहा है।

11:1:1:अभ्यास:3

3. चेजारों के साथ गाँव-समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज क्या फ़र्क आया है पाठ के आधार पर बताइए?

उत्तर:' चेजार लोग कुंई निर्माण में हस्तकुशलता में माहिर होते है और उन्हें दक्ष चिनाई करने वाले कारीगर कहा जाता है। पुराने समय में राजस्थान में चेजारों को विशेष रूप का दर्जा प्राप्त था। जब कुई के चिनाई का काम ख़त्म हो जाता और कुई में पानी रिसने लगता तो चेजारों को विदाई के समय तरह-तरह

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उपहार भेंट दी जाती थी। और कुंई का निर्माण खत्म होने के बाद भी इनका रिश्ता गाँव से बना रहता था उन्हें हर तीज, त्योहारों तथा शादी-विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर विशेष भेंट दी जाती थी। सीधे तौर पर देखा जाये तो उन्हें जलदाता मन जाता था। उनका सम्मान इतना था की फसल पकने के बाद खलिहान में उनके नाम से अनाज का एक ढेर अलग से निकाल कर रखा जाता था। समया के अनुसार अब स्थिति में काफी बदलाव आया हैं अब उन्हें उपहार और अनाज का भेंट नहीं दिया जाता सिर्फ़ मजदूरी देकर उनसे काम करवाया जाता है।

11:1:1:अभ्यास:4

4. निजी होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुंईयों पर ग्राम समाज का अंकुश लगा रहता है। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर: चुकि हम जानते है की राजस्थान हमारे देश का ऐसा राज्य है जहाँ सबसे जयादा पानी की कमी रहती है। गाँवो में यहाँ के लोग पानी के कुइयों और बावड़ियों पर निर्भर रहते है। कुइयों का निर्माण ग्राम समाज की सार्वजनिक भूमि पर किया जाता है।ग्राम समाज का मानना होता है कि कुइयों में पानी बारिश में हुई वर्षा की नमी के कारण आता हैं इस नमी से

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कुईया पूरे साल पानी से भरी रहती है। और नमी की मात्रा वहाँ पे हुई वर्षा से निर्धारित की जाती है। तो नयी और निजी कुइयों के निर्माण का मतलब है कि बारिश की नमी का बंटवारा। जिससे जल के स्तर में गिरावट आएगी। इस लिए निजी होने के बावजूद, सार्वजनिक क्षेत्र में बने कुइयों पर ग्राम समाज का नियंत्रण होता है। अगर इस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो लोग घर-घर में कई कुइया बना देंगे और हर किसी को पानी नहीं मिलेगा। ग्राम समाज नए कुएं के लिए अपनी स्वीकृति तब देता है जब या तो कुइया गिर कर भर ना जाये और नयी कुइयो की जरुरत न पड़ जाये।

11:1:1:अभ्यास:5

5. कुंई निर्माण से संबंधित निम्न शब्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करें - पालरपानी, पातालपानी, रेजाणीपानी।

उत्तर: राजस्थान में पानी के स्वरुप को तीन रूप में बांटा गया हैं -

१ . **पालर पानी** - पालर पानी को पानी का ऐसा रूप माना जाता है जिसमे बरसात के दिनों में हुए बारिश का जल सीधे तौर पर बहकर नदी और तालाब आदि में इक्क्ठा हो जाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

२ . **पाताल पानी** - बारिश के दिनों में वर्षा का पानी जिसे जमीन अपने अंदर सोख लेती हैं नीचे जाकर ‘भूजल’ बन जाता है। और कुओं/ट्यूबबेल के माध्यम से हमें प्राप्त होता है।

३ . **रेजाणी पानी** - रेजाणी पानी का मतलब होता है जो पानी बारिश के दिनों में रेत के नीचे जाता तो है, लेकिन खड़िया मिट्टी की परत होने के कारण भूजल से नहीं मिल पाता है और नमी के रूप में रेत में मिल जाता है, जो कुंई के द्वारा प्राप्त किया जाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in